Dr. Kumari Priyanka

History department

H.D Jain college, ara

Notes for B.A part 2,paper 3

Topic:–कन्नौज पर अधिकार के लिए त्रिदलीय संघर्ष (The Tripartite Struggle for Mastery over Kanauj)

आठवीं शताब्दी में अरबों की सिंध-विजय के अतिरिक्त जो सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण राजनीतिक घटना घटी, वह थी तीन शक्तिशाली राज्यों (गुर्जर प्रतिहार, पाल और राष्ट्रकूट) का उदय तथा कन्नौज पर स्वामित्व के लिए त्रिदलीय संघर्ष । यह संघर्ष आठवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से दसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक चलता रहा। इस संघर्ष में भाग लेनेवाले प्रमुख राजा थे वत्सराज, नागभट्ट द्वितीय, रामभद्र, मिहिरभोज, महेंद्रपाल (सभी गुर्जर प्रतिहार राजा); धर्मपाल, देवपाल, विग्रहपाल, नारायणपाल (पालशासक) तथा ध्रुव, गोविंद तृतीय, अमोघवर्ष प्रथम और कृष्ण द्वितीय (राष्ट्रकूट शासक)। यह संघर्ष अनेक चरणों में समाप्त हुआ।

त्रिदलीय संघर्ष के कारण - त्रिदलीय संघर्ष का एक मुख्य कारण कन्नौज के समृद्धशाली नगर पर प्रत्येक शक्ति द्वारा अपना आधिपत्य स्थापित करने का प्रयास था। युद्ध में संलग्न प्रत्येक पक्ष इस नगर को अपने अधीन करना चाहता था। ऐसा राजनीतिक और आर्थिक कारणों के कारण आवश्यक था। हर्षवर्द्धन के समय में ही कन्नौज उत्तर भारत की राजनीतिक गतिविधियों का केंद्र बन चुका था। अब पाटलिपुत्र अपना राजनीतिक महत्त्व खो चुका था। उसकी जगह कन्नौज ने ले ली थी। प्रो० राधाकृष्ण चौधरी के शब्दों में, "जिस प्रकार प्राचीन काल में बिना पाटलिपुत्र का स्वामी हुए कोई सम्राट नहीं कहलाता था, उसी प्रकार हर्षोत्तर भारत में बिना कन्नौज का स्वामी हुए कोई सम्राट महान नहीं हो सकता था। पश्चिमी एशिया की सैनिक जातियों के लिए जिस प्रकार बेबीलोन था, ट्युटॉनिक बर्बरों के लिए जिस प्रकार रोम था, पूर्वी और दक्षिणी यूरोप के लिए मध्ययुग में बाइजैण्टियम था, उसी प्रकार आठवीं-नवीं शताब्दियों के नवोदित राज्यों के लिए महोदय श्री (कन्नौज) थी।" अतः, यह स्वाभाविक ही था कि हर्ष की मृत्यु के पश्चात की राजनीतिक रिक्तता को कन्नौज पर अधिकार कर समाप्त करने एवं सार्वभौम शक्ति बनने का प्रयास हो। कन्नौज पर अधिकार करने की सबसे अधिक आतुरता गुर्जर प्रतिहारों को थी; क्योंकि उनके पड़ोसी राष्ट्रकूट उनपर लगातार दबाव डाले हुए थे। अतः, गुर्जर प्रतिहार कन्नौज जैसे सुरक्षित और समृद्ध प्रदेश पर अपना आधिपत्य जमाना चाहते थे। राष्ट्रकूट भी उत्तर भारत में अपना प्रभाव फैलाना चाहते थे। यही स्थिति बंगाल के पालों के साथ भी थी। कन्नौज का आर्थिक महत्त्व भी बहुत अधिक था। गंगा और यमुना के मध्य अवस्थित कन्नौज का प्रदेश अत्यधिक उपजाऊ था। यह नदी-मार्ग द्वारा होनेवाले व्यापार

की दृष्टि से उत्तरी एवं पूर्वी भारत के बीच महत्त्वपूर्ण व्यापारिक कड़ी था। अतः, कन्नौज पर अधिकार कर तीनों शक्तियाँ अपनी राजनीतिक एवं आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करना चाहती थीं।

हर्ष के पश्चात कन्नौज की स्थिति - हर्षवर्द्धन की मृत्यु के पश्चात कन्नौज की राजनीतिक

स्थिति बहुत स्पष्ट नहीं है। हर्ष का कोई पुत्र नहीं था। उसे सिर्फ एक पुत्री थी जिसका विवाह वल्लभी में हुआ था। अतः कन्नौज की गद्दी खाली थी। इसलिए आवंतिवर्मन मौखरी के द्वितीय पुत्र सुचंद्रवर्मन ने कन्नौज पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया। उसके बाद आठवीं शताब्दी के आरंभ में यशोवर्मन (725-753 ई०) ने कन्नौज पर अधिकार किया। वह एक शक्तिशाली शासक था। उसने अनेक राज्यों पर विजय प्राप्त की, परंतु अंततोगत्वा उसे कश्मीर के राजा ललितादित्य मुक्तापीड़ ने पराजित कर कन्नौज पर अधिकार कर लिया। ललितादित्य बहुत अधिक समय तक कन्नौज पर अधिकार नहीं रख सका। यशोवर्मन के पश्चात कन्नौज पर 770 ई० के लगभग आयुधवंशी शासकों अपनी सत्ता स्थापित की इस वंश का संस्थापक वज्र युद्ध था इसी वंश के दूसरे राजा इंदिरा युद्ध के समय में त्रिदलीय संघर्ष आरंभ हुआ।